पद १५६

(राग: यमन - ताल: धुमाळी अभंग)

आणीक कांहीं नलगे तुला। एक प्रेमाचा भूकेला।।ध्रु.।। गवळ्याचें उच्छिष्ट ताका। तु पसिरसी मुखा।।१।। मुष्टीभर पोह्या साठीं तूं पसिरसी ओटी।।२।। सुयोधना रागे येसी। विदुराच्या कण्या खासी।।३।। लाज ठेवीं एकीकडे। धूसी अर्जुनाचे घोडे।।४।। भक्तसखा नारायणा। माणिक जीवींच्या जीवना।।५।।